International Journal of Creative Research Thoughts
Volume 1, Issue.3, March 2013 *ISSN:-2320-2882*

ORIGINAL ARTICLE

संस्कार, शिक्षा और शान्ति की जीती जागती प्रतिमाः 'खामोशियाँ बोलती हैं'

डॉ0 अनीता भारद्वाज
अध्यक्ष–हिन्दी विभाग
ऐ0पी0जे0सरस्वती पी0जी0कॉलेज
चरखी दादरी (भिवानी)

सारांश

जिस समाज में मनुष्य जन्म लेता है वहा के संस्कार मनुष्य मे स्वतः जाते है संस्कार जन्म जात नही होते बल्कि सांस्कृतिक गुणों से ग्रहण किए जाते है।सुसंस्कृत मन मे ही बेहतर संस्कारों की प्रतिष्ठा होती है। निष्ठा की प्रतिष्ठा ही संस्कारों को शाश्वत बनाऐ रखने मे सहयोगी होती है। संस्कारों के बिना संस्कृति की कल्पना सम्भव नही है। मानवता को बनाने व बचाने वाली संस्कृति का आधार संस्कार है।

प्रस्तावना

डॉ0 भगवत शरण उपाध्याय के अनुसार 'मनुष्य अपनी आदि अवस्था में संस्कार हीन रहा है। धीरे–धीरे अपने ऊपर प्रतिबंध लगाकर, अनुचित को दबाकर, उचित को लेकर ही सुन्दर बना है। व्यक्ति रूप में शरीर मन को शुद्ध कर एक ओर व्यक्तिगत विकास दूसरी ओर उसका समूह में शिष्ट आचरण, समाज के प्रति उचित व्यवहार उसे सुसस्कृत बनाता है।'[1] 'भारतीय विद्वान संस्कारों को दो भागों में बॉटते है पहला स्वयं के संस्कार अर्थात आत्मगत कहा जाता है जिसमें शारीरिक, मानसिक, भावगत, नैतिक और आध्यात्मिक संस्कारों का समावेश है। समाजगत में समाज की परम्परा से ग्रहण किए गए संस्कार शामिल है। डॉ0 मुन्नीराम शर्मा संस्कार और संस्कृति को एक दूसरे का पर्याय मानते हुए कहते है 'अर्थ की दृष्टि से एक साध्य है तो दूसरा साधन। एक जीवन की ओर इंगित करता है और दूसरा विधि–विधानों की ओर संस्कारों का उद्देश्य है, संस्कृत जीवन का निर्माण। [2] संस्कार मानवीयता की धरोहर है। जीवन को ऊँचाइयों की तरफ ले जाने वाली सीढी है संस्कार डॉ0 किरण वालिया की कविताओं में संस्कार शिक्षा व शान्ति की अनुगूँज है।'सा विद्या या विमुक्तये'[1] शिक्षा वही है जो मनुष्य को बन्धनों से मुक्त करती है अथवा शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक दासता से मुक्त कर सर्वांगीण विकास करती है। "शिक्षा का अर्थ है देश के लिए प्रशिक्षण तथा राष्ट्र के लिए प्यार"[2]। डॉ0 किरण वालिया कई दशकों से शिक्षण–प्रशिक्षण क्षेत्र से जुड़ी है और राष्ट्र के लिए प्यार उनकी आँखों से सदा झलकता है। राष्ट्र की मिट्टी के कण–कण के प्रति वह सदा नतमस्तक हैं। उनकी राष्ट्रीय भावना में देश–प्रेम, त्याग, बलिदान, आत्मानुशासन का समावेश है। राष्ट्र प्रेम की भावना उन्हे

Please cite this Article as : डॉ0 अनीता भारद्वाज, संस्कार, शिक्षा और शान्ति की जीती जागती प्रतिमाः 'खामोशियाँ बोलती हैं'
:International Journal Of Creative Research Thoughts,Volume 1, Issue.3, March 2013

धरोहर रूप में प्राप्त हुई है तभी तो राष्ट्र प्रेम की बात आते ही भावुक हो उठती है। इसलिए राष्ट्र में घटने वाली घटनाओं के प्रति चिन्तातुर दिखाई देती है। राष्ट्रप्रेम उनकी रचनाओं में कभी 'मार्क्स और गान्धी' के रूप में उभरा है तो कभी 'बापू के आह्वान मेंः–

"आ लौट आ बापू तेरा देश
तेरा देश तेरा आह्वान करता है
तेरा दर्शन कभी मर नहीं सकता
आ लौट कर बता दे सबको
अहिंसा, प्रेम, भाई–चारा, मानवता
इन मूल्यों को

कोई मार नहीं सकता।"[3]

ये मानवीय मूल्य एक बार मानव मन में स्थापित हो जाए तो मानव प्रेम की भाषा बोलने लगता है। प्रेम की भाषा में बहुत ताकत है; प्रेम हृदय में उत्पन्न आवेग मात्र नहीं है; वह सच्चा है; शाश्वत है, प्रेम परम आनन्द स्वरूपा है। जब प्रेम से सृष्टि का कण–कण सिंचित होगा तभी जीव मूल आनन्द को प्राप्त कर सकेगा। वालिया प्रेम को मानवीय स्तर पर प्रस्तुत करती है, अपनी अन्तदृष्टि को प्रेम रूप में इस प्रकार निरूपित करती है कि मानव मन भावना की भाषा समझ जाए।

"मन भावना की भाषा
पहचानता है
दिलों को छूता है
जज़्बातों की सींचता है
प्रेम की बोली बोलता है
अपनों को जोड़ता है
.....
सन्देश छोड़ जाता है
मानवता का
भाई चारे का
शन्ति का

अहिंसा का"[4]

प्रेम मानव को धर्मपथ पर अग्रसर करता है। 'धारयते इति धर्मः, वालिया धर्म को धारण करने तक ही सीमित नहीं है, उन्होंने धर्म को विस्तृत अर्थ में लिया है, धर्म को कला संस्कृति और प्रकृति में खोजा है, धर्म को मानवीय सन्दर्भों में निहित माना है। समाज के निर्धन, निरक्षर तथा शोषित लोगों की सेवा सच्चा धर्म है। आज वह धर्म गर्त में जा रहा है।

"धर्म के नाम पर कत्ले आम है"[5]

धर्म शिक्षा का आन्तरिक मर्म है।[6]

जहाँ तक शिक्षा की बात है कुशल शिक्षक होने के कारण शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, राजनैतिक, व्यावसायिक दृष्टिकोण से सर्वांगिण विकास पर बल देती हैं। शारीरिक विकास के आधार पर

खेलकूद व्यायाम को जीवन की आवश्यकता बताया है। महाविद्यालय में प्रवेश करते ही सर्वप्रथम 'व्यायामशाला' को स्थापित की ताकि शरीर को स्वस्थ रखा जा सके। शारीरिक विकास और अध्ययन को परस्पर समान्तर मानते हुए 21वीं सदी के बच्चों के लिए लिखती हैः–

"बच्चे इस दौर के कितने दूर हो गए है
अपनों में रहके अपनों से दूर हो गए हैं
लैपटाप की दुनिया से बना ली है रिश्तेदारी
ई–मेल और चैटिंग में मशगूल हो गए हैं।"[7]

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्ष्कि का विकास होता है। मस्तिष्क विकास के लिए मात्र पुस्तकीय ज्ञान पर्याप्त नहीं है; उसके लिए प्रकृति और जीवन से प्रत्यक्ष अनुभूति जन्य ज्ञान की आवश्यकता है। शिक्षा के माध्यम से चिन्तन–मनन, कल्पना, स्मरण आदि के लिए समय–समय पर वाद–विवाद, भाषण, कविता, संगोष्ठी, सम्मेलन, प्रदर्शनियों के आयोजन के लिए प्रेरक स्तम्भ हैं।

कवयित्री ने स्त्री शिक्षा पर विचार प्रकट करते हुए कहा है

"जो निकल पड़ी है
अपने अस्तित्व के लिए
अपनी पहचान के लिए
नए रास्ते तलाशने को
नई मंजिलों की प्राप्ति के लिए।"[8]

एक शिक्षित नारी दो परिवारों को नहीं अपितु अपने आसपास के पूरे परिवेश को शिक्षित करने का हौंसला रखती हैं। जहाँ एक ओर शिक्षित नारी जागरूक होकर किरण बेदी बनती है तो दूसरी और मदर टेरेसा बन कर शान्ति में सहायक सिद्ध होती है, अतः स्त्री शिक्षा अनिवार्य है। राजनीति का विषय वे भारत माता से सांझा करना चाहती हैं कि इस भ्रष्टाचार की राजनैतिक शिक्षा शिक्षार्थियों को कैसे प्रदान की जाए।

"राजनीति में सब जायज़ है
बता दे माँ
सच क्या है
क्योंकि नई पीढ़ी को
मुझे सच के लिए तैयार करना है माँ....."[9]

भावी पीढ़ी को वास्तविकता से अवगत करा नैतिकता का पाठ पढ़ाना चाहती हैं, नैतिकता जो धर्म और कर्म पर आधारित है। नैतिकता का अनुसरण करने वाला मनुष्य कंगाली में भी सुखी है। नैतिकता ही है जो मनुष्य को पशुत्व से ऊपर उठा देवत्व की ओर ले जाती है। सबके सुख की कामना करने वाले 'बरगद' का विचार वालिया का नैतिक विचार ही तो हैः–

"जब ये दोनों एक साथ
मेरी छाँह में पनाह लेंगें
और मेरा बूढ़ा बरगदी मन
अपने अश्रुओं से

उनका अभिषेक करेगा।"[10]

विश्व बन्धुत्व की भावना के दर्शन भी 'खामोंशियाँ बोलती हैं' में स्थान–स्थान पर होते हैं। वालिया की सोच राष्ट्रवाद की सीमाओं का अतिक्रमण करके विश्वव्यापी होना चाहती है, उनकी उड़ान विश्व समुदाय तक पहुँचने को आतुर हैं। विश्व बन्धुत्व पर अपने विचारों के पंख लगाकर पंछियों की भान्ति समस्त वितान को अपना मानती हैंः–

"क्या कोई संदेश है किसी अपने का?
उस पार भी मेरी तरह
बैठा कोई छत पर
ताकता होगा सरहद पार
सोचता होगा जब कोई पंछी
उड़कर उसकी मुंडेर पर बैठे
क्या कोई संदेश है किसी के आने का"[11]

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कवयित्री आशावादी है, वह उस दिन की आशा में बैठी है जब चहुदिस शांति होगी, जब सब मनुष्य जाति–पाति, धर्म–अर्धम, ऊँच–नीच के भेदभाव भूलाकर एक हो जाऐंगे, तब इंसानियत हंसेगी खिलखिलाएगीः

ये जरूरी नहीं
कि सच हरदम सूली पर चढ़ेगा
अहिंसा गोलियों से छलनी होगी
मुहब्बत पर हरदम पत्थर बरसेंगे
और इन्सानियत हमेशा हार जाएगी ये जरूरी नहीं। [12]

सन्दर्भ सूचीः

1. राजकिशोर ओझा–भाषण कला पृ0सं0–7
2. डी.डी.महत्ता–आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा पृ0सं0–7
3. डॉ0किरण वालिया– "खामोशियाँ बोलती हैं" पृ0सं059
4. ..वही... पृष्ठ सं0 22
5. ..वही... पृष्ठ सं0 19
6. राजेन्द्र मिश्र प्रह्लाद तिवासी "विश्व के शिक्षा शास्त्री" पृ0सं0 256
7. डॉ0किरण वालिया– "खामोशियाँ बोलती हैं" पृ0सं03
8. ..वही... पृष्ठ सं0 38
9. ..वही... पृष्ठ सं0 19
10. ..वही... पृष्ठ सं0 78
11. ..वही... पृष्ठ सं0 54
12. डा0 भगवत शरण उपाध्याय, सांस्कृतिक भारत, पृ0 12
13. डा0 मुन्नीराम शर्मा, वैदिक संस्कृति और सभ्यता,पृ0 49

Please cite this Article as : डॉ0 अनीता भारद्वाज, संस्कार, शिक्षा और शान्ति की जीती जागती प्रतिमाः 'खामोशियाँ बोलती हैं'
:International Journal Of Creative Research Thoughts,Volume 1, Issue.3, March 2013